*International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)*
*ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714*
*www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 12 Ver. III || December 2018 || PP 97-99*

# कृष्णा सोबती का कथा साहित्य आधुनिकताबोध और नारी संदर्भ

बींजम ैनदपजं च्ंदकनतंदहंतंव
*त्मेंतमबी \`बीवववसमत क्म्च।त्ज्डम्छज व्ध भ्प्छक्प् त्ज्श्रै न्छप्टम्त्ैप्ज्ल् ब्भ्न्त् ;त।श्रद्ध*
*क्त्ण् ड्म्म्छन्*
*ैव्ब्।ज्म् च्त्व्थ्मैैव्त् क्म्च।त्ज्डम्छज व्ध भ्प्छक्प् त्ज्श्रै न्छप्टम्त्ैप्ज्ल् ब्भ्न्त् ;त।श्रद्ध*

***सार***
*स्वातंत्र्योत्तर कालीन हिन्दी महिला उपन्यासकारों में जिन नामों का अपना अलग साहित्यिक रूतबा है उनमें कृष्णा सोबती जी का नाम अग्रणी है। हिन्दी कथा जगत में जिन्होंने अपने लेखन के बल पर तहलका मचा दिया उन चुनिंदा लेखिकाओं में कृष्णा जी का स्थान महत्त्वपूर्ण मानना होगा। अनेकविध विषयों तथा विधाओं में लेखन कर उन्होंने अपनी मेघावी प्रतिभा का परिचय दिया है। कृष्णा सोबती स्त्री स्वतंत्राता की प्रेरक है। स्त्री प्रारंभ में पिंजरे में बंद तोते के समान थी। कृष्णा जी ने यहाँ की नारी की पराधीन जिंदगी को करीब से देखा था, देखा ही नहीं अनुभव भी किया था। उन्होंने पाया था कि भारतीय स्त्री बंधन में जकड़ी है। उसे बंधन मुक्त करना युग की माँग थी। कृष्णाजी ने अपने साहित्य के माध्यम से नारी जीवन को व्याख्यायित करते हुए उसके स्वतंत्राता की भी हिमायत की है। अपने कई नारी पात्राों के माध्यम से उन्होंने नारी स्वतंत्राता के समर्थक के रूप में अपना परिचय दिया है। अतः अपने लेखन में प्रसंगानुसार उन्होंने नारी स्वतंत्राता का प्रबल समर्थन किया है। अपने अनुभव जगत को उन्होंने जो वाणी दी है वह निश्चय ही जानदार ही अनुभव की प्रामाणिकता और अभिव्यक्ति की सशक्तता के कारण उनका लेखन दाद देने योग्य बना। नारी मन तथा नारी जीवन का उन्होंने जिस गहराई से चित्राण किया, उसने उन्हें अपने काल की सशक्त लेखिका सिद्ध किया है।*

***कुंजीशब्द*** *कृष्णा सोबती , कथा साहित्य आधुनिकताबोध , नारी संदर्भ*

## प्रस्तावना

हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में कृष्णा सोबती का नाम विशेष उल्लेखनीय है। ये स्वातंत्र्योत्तर लेखिकाओं में सबसे अधिक चर्चित रही हैं। इस चर्चा का प्रमुख कारण है कि इन्होंने पंजाबी संस्कारो से युक्त नारी–मन का खुलेपन के साथ चित्रण किया है।

वैसे स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य के क्षेत्र में मन्नू भण्डारी, उषा प्रियम्वदा, शिवानी, अलका सरागवी आदि कई महिला लेखिकाओं ने अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। इन लेखिकाओं ने आधुनिक नारी की बदलती हुई मनरूस्थिति, दाम्पत्य संबंध, काम जन्य प्रेम तथा नारी मनोविज्ञान आदि को व्यापक फलक पर दर्शाया है। लेकिन सोबती जी के कथा साहित्य में आधुनिकता बोध से सम्पन्न नारी चित्रित की गई हैं। इनकी प्रायः सभी कथाकृतियाँ नारी केन्द्रित है। ये नारियाँ अपने श्स्वश की पहचान के लिए जीवन से संघर्ष करती नारियाँ है। इनके इस संघर्ष के पीछे श्स्वश की पहचान तो है ही साथ ही पंजाब के परिवेश, परम्पराओं तथा जैविक धरातलों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इस संदर्भ में सुधीश पचौरी जी का कथन ध्यान देने योग्य है

ष्कृष्णा जी की रचना प्रक्रिया की कुंजी मूलतरू उनके नारी–पात्रों के चित्रण में निहित है जो बार–बार उनकी कथाओं में आए हैं। कोई पंजाबी नारी–जीवन के विविध स्तरों का अध्ययन करना चाहे तो कृष्णा जी की कृतियाँ खासकर श्जिन्दगीनामाश एक महत्वपूर्ण संदर्भ बन सकती है।श्श

(1) पात्रों के सन्दर्भ में स्वयं सोबती जी के विचार सराहनीय है– ष किसी भी रचना की प्रामाणिकता केवल लेखक की जीवन–दृष्टि से ही जुड़ी बंधी नहीं होती। उसकी रचनात्मक उड़ान की सामर्थ्य पात्रों की मांस–मज्जा, मिजाज, स्वभाव और हड़ी की मजबूती में भी छिपी रहती है।श्श(2)

सोबती जी के रचनात्मक प्रतिभा का श्रेय बहुत कुछ इनके साहित्य में आये नारी पात्रों को जाता है। इनकी नारियाँ आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन नारियों में एक तत्व विशेष रूप से है वह है निज की चेतना और विश्लेषण की शक्ति। "कृष्णा सोबती के नारी पात्रों की निजी जीवन–दृष्टि ही नारी की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक छवि के तिलिस्म को तोड़ती है।श्श (३) श्मित्रोमरजानीश की मित्रों, 'सूरजमुखी अंधेरे केश की स्ती श्ऐ लड़कीश की अम्मू तथा उसकी लाड़ली बेटी। श्दिलोदानिशश की महक बानो, छुन्ना तथा समय सरगम की अरण्या आदि नारियां परम्परावादी मान्यताओं का खण्डन कर आधुनिकता बोध का प्रतिनिधित्व करती हैं।

## पात्र परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व

प्रत्येक कहानी तथा उपन्यास में एक कथा–वस्तु होती है, जो मानव जीवन से संबंधित होती है। अतएव मानवी जीवन अर्थात मानवीय पात्रों की उपस्थिति के बिना कथानक की कल्पना ही नहीं की जा सकती। जीवन के फलक को साकार करने के लिए लेखक मनुष्य को ही पात्र–रूप में ग्रहण करता है तथा उसके चरित्र को बहु–आयामी अर्थवत्ता प्रदान कर उसे अमर बना देता है। जीवन की जटिलता एवं विविध भाव भंगिमाओं का यथार्थ चित्रण पात्रों के माध्यम से ही संभव होता है। यही कारण है कि कभी–कभी कथा–साहित्य के पात्र कथा साहित्य से भी अधिक प्रसिद्धि पा लेते है और साहित्य के बदले में वे ही याद रह जाते है। कथाकार विशिष्ट परस्थितियों के घेरे में पात्रों को रखकर उसके अंतरूपों को उभारकर तराशता है और इस प्रकार तराशा हुआ पात्र जीवन के साधारण व्यक्ति की अपेक्षा अधिक स्पष्टता से व्यक्त होता है। इसलिए कथा साहित्य में चरित्र–चित्रण को अत्याधिक महत्ता प्राप्त हुई है। पात्रों की चरित्रगत विशेषता के अभाव में न तो कथानक का विकास संभव है और न कथोपकथन जैसी प्रणाली की कल्पना की जा सकती है।

## अध्ययन के उद्देश्य

1. कहानियों में नारी पात्र और आधुनिकता का अध्ययन
2. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी समस्या का अध्ययन

## कहानियों में नारी पात्र और आधुनिकता

कृष्णा सोबती जी कहानी लेखन के क्षेत्र में स्वतंत्रता पूर्व से ही जुड़ जाती हैं जिसके कारण इनकी कहानियों का विषय और उनमें प्रतिबिम्बित दृष्टिकोण एक सीमा तक परम्पराबोध से जुड़ा हुआ है लेकिन बाद की इनकी कहानियाँ परम्परा बोध से मुक्त होकर आधुनिक बोध में परिणत हो गई हैं। आधुनिक प्रेम के श्तिकोनश की विडम्बना को कृष्णा जी ने अपनी कहानियों में आंका है। वैवाहिक जीवन में तीसरे के आगमन से टूटते संबंध तत्पश्चात पश्चात्ताप की अग्नि में जलने को बाध्य आधुनिक नारी की मानसिकता को लेखिक ने चित्रित किया है। इस संदर्भ में श्कुछ नहीं कोई नहींश कहानी की शिवा ध्यान देने योग्य कृष्णा सोबती वैयक्तिक मूल्यों को प्रधानता देने वाली लेखिका हैं। इनकी कहानियों के

नारी पात्रों में प्रेम, निराशा, घुटन, हताशा आदि आयामों को देखा जा सकता है। सोबती जी ने कहानियों के नारी पात्रों के सृजन के द्वारा नारी समस्याओं को उजागर कर उसके प्रति पाठकों की संवेदना जगाने तक ही सीमित रहीं हैं।

इन्होंने इन समस्याओं का समाधान देने या इन समस्याओं के संबंध में व्यक्तिगत मान्यताओं को स्पष्ट करने का प्रयत्न नहीं किया है। लेकिन अपनी दयनीय स्थिति के कारणों के प्रति सोचने की चेतना कहानियों के नारी पात्रों से ही शुरू हो जाती है। यहीं नारी पात्राएँ आगे चलकर उपन्यासों में आधुनिक चेतना सम्पन्न नारी के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करती हैं। इस संबंध में कुछेक कहानियों के नारी पात्र वर्णन करने योग्य हैं। श्बादलों के घेरेश कहानी की मन्नो, श्सिक्का बदल गयाश की शाहनी, श्आजादी शम्मो जान कीश मुन्नी जान, श्कुछ नहीं कोई नहींश की शिवा, 'बदली वरस गईश की कल्याणी आदि नारी पात्रों की आधुनिकता बोध के संदर्भ में मूल्यांकन करने से पूर्व प्रमुख कहानियों के नारी पात्रों के बारे में जानना समीचीन होगा। ये नारी पात्र ही उपन्यासों के नारी पात्र की आरम्भबिंदु है।

## जिंदगीनामा

### शाहनीः

शाहनी, शाहजी की पत्नी है। शादी के बाद कई वर्ष बीत जाने पर शाहनी परेशान दीखती है। वह बच्चा चाहती है। बच्चा न होने पर जीवन में विकल थी। शाहनी को जीवन में इस बात का डर है कहीं शाहजी दूसरी शादी न कर लें। एक दिन शाहजी उससे दूसरी शादी की बात कहता है । तब शाहनी सौतन को अस्वीकार करती है। और बच्चा गोद लेने में ही परिवार का भला समझती है। इस तरह संतान बिहीन शाहनी के बेली बाबा फरीद के द्वार पर मन्नत मांगने जाती है। बाबा के आशीर्वाद फलतें है। शाहनी की इच्छा पूर्ण होती है और उसका पाँव भारी हो जाता है। उसे बस माँ बनने के सपने दिखाई है – ष्आंगना में घुटनों चलता लहुडा बालक उनके कानों में काली सीलम की फूम्मनियाँ । कमर में काली तड़ागी। ऋषिकुमार उतर आया हो कहीं से ! ठुमक ठुमक ! यह क्या ? कृष्ण कन्हाई के पैरों में जैसे कोई धुंघरू बजते हों ! पीछे – पीछे गउओं का झुण्ड ।

काली गायें आखों के आगे आई थी कि शाहनी की नींद खुल गयी ।ष्(49) शाहनी के घर लड़के का जन्म होता है। शाहनी माँ बन बहुत खुश होती है। अतः खुशी जाहिर करने के लिए वह गाँव में दावत देने के लिए न्यौता देती है। ब्रह्मभोज कराती है। शाहनी जितनी गहराई से स्त्री धर्म परिवार की मर्यादा एवं गृहस्थी दायित्व से जुडी हैं, उतनी ही बह गाँव के सुख – दुःख से बँधी हैं। पति परित्यक्ता मॉबीबी की लाड़ भरी देखभाल, अनाथ करतारों के विवाह का आयोजन , पथभ्रष्ट विधवा ब्राह्मणी की सहायता दूध , फल , मेवे से भरे भण्डार गाँव की कुड़ियाँ चिड़ियाँ खोल देने की आतुरता शाहनी , शाहजी का प्रतिरूप है । शाहनी पतिव्रता है , सच्चे अर्थों में पति अनुगता। पति से भिन्न किसी पहचान की आकांक्षा नहीं। पति के व्यक्तित्व में स्वयं को पूर्ण तथा लय कर देने की आतुर । कहना न होगा शाहनी सती खी का आदर्श रूप है।

### महरी चाची

महरी चाची विधवा वृद्धा खी रूप में चित्रित है। महरी चाची शाह भाईयों की शाहजी , लालीशाह की सगी माँ तो नहीं है, परंतु वह उनको पुत्रवत प्रेम करती है। दोनों शाहनियों को पुत्रवधु सा प्रेम देती हैं । महरी चाची विधवा होने के कारण वह अपने परिवार से ही जुड़े रहने का प्रयत्न करती है। महरी चाची सुक्खमनी साहिब का पाठ करती हैं तब उसको सरदार साहिब सिंह की याद आती है। छोटे साहिब सिंह उसकी आँखों से ओझल नहीं होता है । वह देवर से मिलने पहुंच जाती ळें

## कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी समस्या

### विवाह की समस्या

विवाह समाज की एक अनिवार्यता है, समस्या नहीं, किन्तु आज की विषम परिस्थितियों ने इस अनिवार्यता को भी समस्या का रूप दे दिया है। संसार में अनैतिकता को रोकने का एक मात्र उपाय विवाह ही है, इस तथ्य से मुख नहीं मोड़ा जा सकता है । वैवाहिक प्रश्न जटिल बनाने में एक ओर परिवर्तन होनेवाली परिस्थितियों का हाथ है तो दूसरी ओर सामाजिक कुप्रथाओं ने भी इसको जटिल बनाया है। दहेज की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, जीवनसाथी के चयन के अधिकार से वंचित रहने की समस्या । विवेच्य उपन्यासों में कृष्णा सोबती ने नारी जीवन से सम्बन्धित विविध समस्याओं में से विवाह की समस्या को पर्याप्त मात्रा में प्रस्तुत किया है।

श्सुरजमुखी अन्धेरे केश उपन्यास की नायिका रत्ती चाहने पर भी विवाह के बन्धन में नहीं बंध सकती क्योंकि वह जिसे चाहती है वह दिवाकर पहले से ही शादीशुदा है। रत्ती दिवाकर के विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा देती है। क्योंकि उसकी दृष्टि में विवाह स्त्री पुरुष के यौन सम्बन्धों की वैधता का एक प्रमाणपत्र मात्र नहीं विवाह है ढेरो ढेर कर्तव्यो दायित्व के सम्यक पालन का गुरु गंभीर दायित्व है।

### दहेज की समस्या

दहेज प्रथा से समाज में अनेक समस्यायें जन्म लेती है। वेश्या समस्या, अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह, विधवा विवाह, प्रायः सभी समस्याओं के मूल में दहेज की कुप्रथा है। जब तक दहेज की कुरीति समाज का दामन नहीं छोड़ेगी तब तक विवाह की समस्या का समाधान होना कठिन है।

आर्थिक दरिद्रता के चंगुल में फंसे हुए माता–पिता जब कन्याओं के विवाह के लिए देहज की उपयुक्त सामग्री जुटाने में असमर्थ होते हैं तो उन्हें हारकर अपनी कन्याओं को वृद्ध या अयोग्य वरों के हाथो सौंपना पड़ता है। पति की मृत्यु के बाद आर्थिक प्रश्न के कारण ये स्त्रियाँ निराश होकर अनैतिकता की शरण लेती है। प्राचीन काल में दहेज समस्या नहीं थी। लोग कन्या का विवाह आभूषणों से अलंकृत करके करते थे। आज तो दहेज एक मध्यवर्गीय समाज की घृणित बीमारी है। आज विवाह के लिए दहेज आवश्यक हो गया है। कोई भी पिता इस समस्या का समाधान आसानी से नहीं कर पाता । कृष्णा चराटे के शब्दों में दृ "लड़की का बाप संसार का सबसे निरीह प्राणी माना जाता है। अपने साथ दहेज लानेवाली बहू परिवार में हंगामा मचाती है। वह किसी को सुख से जीने नहीं देती।

श्मित्रो मरजानीश में फुलॉवंती मायके से दहेज के रूप में जो गहने लाई है उसे वह बार बार ससुराल वालों को भाँगती है और घर में हमेशा झगड़ा करती है। जैसे दृ "मेरी मॉ के दिये गहने–कपड़े कोई क्यों लें ? क्यों बाँटे ? कोई लूट के है ?" फूलॉवती घर में झगड़ती है। अर्थात् यहाँ दहेज के कारण ही समस्या खड़ी हुई है। इसीलिए यहाँ दहेज एक समस्या बन गई है। इसी दहेज के कारण अनेक युवतियों की जिंदगी बर्बाद हो चुकी है।

### अनमेल विवाह की समस्या

समाज में आज भी अनमेल विवाह की कमी नहीं है। 'डार से बिछुड़ीश की पाशो की जिंदगी अनमेल विवाह के कारण ही बर्बाद हो जाती है। दिवान जी युवा नहीं थे, वे बूढ़े हो चुके थे। वे पाशो के पिता की उम्र के थे। पाशो दीवानजी की बेटी के समान दिखाई देती थी। पाशो सोचती है दृ "जी धक–धक करने लगा। जिनकी बैठक में रातभर टिकी थी, वह तो किसी के बेटे से नहीं दिखते थे। पका–पका चेहरा ।" स्पष्ट होता है कि पाशो की शादी एक से हो गई है, याने इसमें अवस्था या उम्र का अन्तर आ गया है। श्मित्रो मरजानीश में सरदारी लाल का विवाह वेश्या पुत्री मित्रो से हो चुका है। इसीलिए इन दोनों में हमेशा झगड़े होते रहते हैं।

यहाँ पर सामाजिक स्तर की भिन्नता की बात आ जाती है, जैसे दृ "यह कूडा मेरे भाग था।" इससे यह स्पष्ट होता है कि विवाह में सामाजिक स्तर भी एक समस्या बनकर आता है। श्दिलो–दानिशश में कृपानारायण और कुटुंब में विचारों की अनमेलता है। इसीलिए उन दोनों में

हमेशा झगड़े होते रहते हैं। जैसे वकील कृपानारायण के शब्दो में ही दृ "सुनिए, बीवी होने के नाते आपको यह अहसास तक नहीं है कि अच्छी गुप्तगू और देग का लुत्फ उठाने का हक भी शौहर का बनता है।

मगर आपके पास वही पुराना दुखडा।" स्पष्ट है कि इन दोनों पति–पत्नी के विचारों में अनमेलता है। यही उनके लिए समस्या बन गई है। इस प्रकार अनमेल विवाह भी एक प्रमुख वैवाहिक समस्या है। विवाह स्त्री–पुरुष दोनों के जीवन का महत्त्वपूर्ण निर्णय है। इस सूत्र में बंधने से पूर्व अनेक सोच–विचार, सलाह–मशवरे, जाँच–पड़ताल की आवश्यकता होती है। अन्यथा विवाह जीवन के लिए बोझ बन जाता है। जीवन को नहक बना देता है। अनमेल विवाह एक सामाजिक विकृति है। अनमेल विवाह से अभिशिप्त पाशो, मित्रो और कुटुंब आजीवन सुख की तलाश में संघर्ष करती हैं निष्कर्षतः स्पष्ट है कि कृष्णा सोबती ने अनमेल विवाह में घुटती, पिसती नारी का चित्रण भी यथार्थ रूप में किया है।

**जीवनसाथी के चयन के अधिकार से वंचित रहने की समस्या**

आज के युग में पुरुष और स्त्री स्वतंत्र रूप से विचार करने लगे है। किन्तु अधिकतर परिवार वाले उनको अपने जीवनसाथी के चयन का अधिकार नहीं देते । वैवाहिक जीवन स्त्री पुरुष को स्नेहसूत्र में बाँध देता है। परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए विवाह सीमा रेखाएँ दम्पत्तियों के बीच अवश्य खींच देता है, जो समाज स्वीकृत है। 'डार से बिछुड़ीश की पाशो को अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार नहीं है। वह करीमू को चाहती है लेकिन उससे वह शादी नहीं कर पाती । मामाओं ने पाशो की हत्या की योजना बना ली। पाशो की माँ मेहर ने अपने जीवनसाथी के रूप में शेखजी को चुना है। इसीलिए मेहर के दोनों भाई मेहर के दुश्मन बन गए।

**अपना अस्तित्व खो जाने की समस्या**

नारी के लिए अपना अस्तित्व ही सबकुछ होता है। हर बार पुरुष द्वारा उनके इसी अस्तित्व का हनन होता है। शदिलो–दानिशश में महेकबानों अपनी पूरी जिन्दगी में अपने अस्तित्व और अस्मिता का बोध होता है। उसे लगता है की आज से पहले वो ओढनी थी, अंगिया थी, सलवार थी यह औरत ही नहीं थी। महेक दो बातों से परिचित है कि वह कातिल नयनिया नसीमबानो की पुत्री है। अतः कुलीनता एवम् घरगृहस्थी की सुरक्षित चौखट से बाहर है। महेकबानो यह भी जानती है कि वह वकील कृपानारायण की रखैल है, ब्याहाता पत्नी नहीं। अर्थात् दोनों के बीच एक नामविहीन सम्बन्ध है । महकबानो और कृपानारायण के बीच सिर्फ प्रेम का रिश्ता है।

**उपसंहार**

सोबती जी ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से, नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने अपने उपन्यासों–कहानियों द्वारा नारी जीवन के अत्यंत प्रभावशाली और सजीव चित्र प्रस्तुत किए हैं। इनके कथा–साहित्य की नारियाँ – पाशो, जया, मित्रो, रत्ती, शाहनी, अम्मू, महक बानो, छुन्ना एवं आरण्या आदि आधुनिक नारी के रूप में अवतरित हुई हैं। ये नारी पात्र सिर्फ भावना से भरी हुई आदर्श की प्रतिमा नही हैं बल्कि अपनी आवश्यकताओं इच्छाओं की पूर्ति के लिए आदर्शों को ठुकराने वाली है। इन्हें समाज और ईश्वर का भय नहीं है। ये बेहद आत्म गौरव एवं आत्मसम्मान की भावना से भरी है। अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की तलाश ही इनके जीवन का मुख्य उद्देश्य हैं।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि


[1] हिन्दी उपन्यास : एक सर्वेक्षण', डॉ. महेन्द्र चतुर्वेदी, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, प्रथम संस्करण,1962

[2] 'हिन्दी उपन्यास', डॉ. सुषमा प्रियदर्शनी, राधाकृष्ण मूल्यांकन माला, प्रथम संस्करण,

[3] 'हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव', डॉ. भारतभूषण अग्रवाल, प्रकाशक : ऋषभचरण जैन एवं संतति, प्रथम संस्करण,1971

[4] 'हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परम्परा में साठोत्तरी उपन्यास', डॉ. पारुकान्त देसाई, चिंतन प्रकाशन, प्रथम संस्करण,2002

[5] 'हिन्दी काव्य में नारी', वल्लभदास तिवारी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्रथम संस्करण,

[6] 'हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी', डॉ. रेवा कुलकर्णी, चन्द्रलोक प्रकाशन, प्रथम संस्करण,1994

[7] 'हिन्दी भाषा और भाषा विज्ञान', डॉ. अशोक के. शाह 'प्रतीक', अमर प्रकाशन, प्रथम संस्करण,

[8] 'हिन्दी लघु उपन्यास', नरेन्द्र चतुर्वेदी, आनन्दी प्रकाशन, प्रथम संस्करण,1996

[9] 'हिन्दी लघु उपन्यासों के संदर्भ में निर्मल वर्मा के उपन्यास', डॉ. छाया मोहरीर, भारतीय ग्रंथ निकेतन, प्रथम संस्करण,

[10] 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण,

[11] 'हिन्दी साहित्य कोश भाग–1', डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञान मंडल लि., द्वितीय संस्करण, वि. सं. 2020

[12] 'आस्पेक्ट्स ओफ द नोवेल', ई. एम. फारर्स्टर, ए पेनग्विन इन्टरनेशनल एडीशन, रि–प्रिन्टेड,1972